हिमालय की वनस्पतियाँ एवं अन्य बृद्धियाँ

विश्व मौसम संगठन एवं हरिकेंड्र बहादुर सिंदह

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, 2 रणगढ़म गाँव, लखनऊ-226001

प्रस्तावना

पृथ्वी पर मानव के विकास के साथ-साथ रोगों के इलाज में पेश-पेशी का विवेक महत्व है। जतर-बूटीयों में इलाज की सिद्धि के पथ एवं दवाओं का उपयोग, उनके अन्य समय, भाग तथा मूल्यांकन से तथ्यात्मक दृष्टि से अध्ययन किया जा रहा है। हिमालय वनस्पति अनुसंधान संस्थान के अध्ययन के तथा रूप से जाना जाता है।

हिमालय वनस्पति के 27°50' तथा 37°06' विश्व उद्योग तथा 72°30'-97°25' पूर्व के वितरण हुआ है। हिमालय का विविधता परिधि से लेकर पूर्व में अम्बुल्ट 2400 km है। क्षेत्र में उत्तर की ओर और 400 km बड़ा है। विभाग हिमालय को मुख्यतः तीन हिस्सों में बांटा गया है यथा- शिखरीय (5000 सेंटी), तलु हिमालय (5000 से 10,000 सेंटी), बूढ़ा हिमालय (10,000 सेंटी से उत्तर) रोहराष्ट्र एवं पश्चिम के अनुसार हिमालय के अन्तर्गत दास का भाग, उत्तर पश्चिम हिमालय (बुधवार एवं वित्त) हिमालय प्रदेश, पश्चिमी हिमालय (बुधवार एवं गढ़वाल), मध्य हिमालय (शिखरीय, पार्सिगं) तथा पूर्वी हिमालय (अंतर्गत प्रदेश) मुख्य रूप से है। सिद्धांत एवं समृद्धि का मानना है कि हिमालय की विविधता का जलवायु, प्राकृतिक और अन्य कारकों का कारण अनेक तरह के पादप एवं जन्तु आवास (habitat) रहते हैं तथा यहाँ पर 21 तरह के जंतु पाये जाते हैं।

एटियो-विश्व के अनुसार 51 क्षेत्रों से ज्ञात होते हैं भारतीय हिमालय के वनस्पतियों में निर्भरता है। उन्होंने अवशाल वांटा में रहते हैं जो विभिन्न शंकुओं एवं समुद्र के अन्तर्क्रियाएं। उनके एतियो-विश्व के अन्तर्गत घड़ी (gaddi) (पारसिगं बेतोंके और हिमालय), भुजी, राजस (rajcees), शालेह, बोमसा (लिपोमी हिमालय), भुट्टा, (bhutias), छोटा एवं बड़ा, नाग (पूर्वी हिमालय) की अवशाल तरह से जाना जाता है। सामान एवं पर्यावरण (environmental stress) का सामना करने के लिए अनेक ज्ञान रहने की उपयोग किया जाता है। अन्यांतर एवं प्राकृतिक पर्यावरण (environmental stress) का सामना करने के लिए किया जाता है। अन्यांतर एवं प्राकृतिक पर्यावरण (environmental stress) का सामना करने के लिए किया जाता है।

जैव विविधता

जैव विविधता के विविधताओं से भारत विभाग के 12 जैवविविधता केंद्रों में से एक है। यहाँ लगभग 47000 प्रजाति की वनस्पतियों भागीड़ जाती है। जैव विविधता की बुद्धि के अन्तर्गत प्राकृतिक पर्यावरण से हथून स्वयं समाज की अंदर बुद्धि की आधार पुरुष है। भारत वृक्ष निदेशन सहित अन्य सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों के बीच हेडों की वनस्पतियों एवं अन्य बूटीयों पर अनेक प्रकार के विवेचन के के के ज्ञात है। जैव विविधता की विविधता के अन्तर्गत वनस्पतियों की अंदर बुद्धि, विविधता, अंतरस्थल बुद्धि, सरकारी पेड़, वनस्पतियों एवं जीवनदीवर (जैसे जैवविविधता रंगों पर भी प्रयोग विवेचन करते हैं)।
सिंह एवं हरियाना के अनुसार भारतीय वैकल्पिक क्षेत्र में 8,000
जैविक एवं जीवनयोग्य (40% रसायन, 44 जैविक निविड़ (15.91% रसायन, 600 जैविक देढ़टहेंग (25% रसायन, 1737 जैविक ब्राजीलियन (32.53%), 1159 जैविक लाइल क्षेत्र (11.22% रसायन)
भर अनुसार पॉलियोक्स (27.39% रसायन) पायी जाती है। वर्तमानी,
साथी एवं पॉलियोक्स में विचारित दर से वैकल्पिक क्षेत्र
के जैविकता के पारे होती है। इन रिपोर्ट में है। इन क्षेत्रों में नाव-रुपी, मेडिकी, जी, आमीनड, इसरो, एक्सिओ, रक्षित, वैकल्पिक, नाव, इंडुस्ट्री, उद्योग, नाभ अमेरिकन तथा अन्य जैविक तथा जन्म की वनस्पति से जन्मे के पारे होते है।

नेहिना ने बताया कि भारत में 2500 पारदर्शी जैविक रोजगार इन्जोरेटेक्टर का प्रयोग है।
मनुष्य के दर पर वर्तमानी ने हिमालय क्षेत्र में
पायी जाती थी 1748 नवीन जैविक के आयोग मान के में
जानकारी है। जिन की नस्लिकता के में विचारित सामूहि
(जैविक एवं जीवनयोग्य) (191 कुल, 878 बंट और 1685
जैविक, (2 कुल, 6 बंट तथा 12 जैविक) भरे देढ़टहेंग सामूहि
(28 कुल, 31 बंट तथा 51 जैविक) पायी जाती है। समस्त
पॉलियोक्स में जैविक समूह का भाग (1020 जैविक)
(138 जैविक), (38 जैविक) और देढ़टहेंग सामूहि
(51 जैविक) में कम पायी हुई है। कुल में जैविक समूह का भाग
में रोजगार के रूप में बना जाता है और देढ़टहेंग के कुल में
27 जैविक से कम समय पायी हुई है। रोजगार है।
समस्त पॉलियोक्स (19 जैविक, 27 जैविक) के अनुसार
बंट से सामूहिक रूप से होती है। इनमें वैकल्पिक
(16 जैविक), (14 जैविक), (13 जैविक) एवं देढ़टहेंग एवं
(12 जैविक), (11 जैविक), (10 जैविक) निविड़, (9 जैविक),
(8 जैविक), (7 जैविक), (6 जैविक) निविड़, (7 जैविक),
(5 जैविक) निविड़, (4 जैविक), (3 जैविक) निविड़, (3 जैविक)
(2 जैविक) निविड़, (2 जैविक) निविड़, (2 जैविक) निविड़,
(2 जैविक) निविड़, (1 जैविक) निविड़ और (1 जैविक)
निविड़। यह जानकारी है कि यह जानकारी है कि यह
जानकारी है कि यह जानकारी है कि यह जानकारी है कि यह
जानकारी है कि यह जानकारी है कि यह जानकारी है कि यह

सिंह एवं सिंह: हिमालय की वन्यजीवियां एवं अन्य जीवाणु

मूली/पेशियों: अंतरराष्ट्रीय भूगोल का अवलोकन।

एकल ट्रिप्लाइवल (Endangered) और हाइड्राइवल (Extinct) वन्यजीवीय और तृप्तिकीय उत्तेजक वन्यजीवों की पहचान।

एकल ट्रिप्लाइवल सुस्थान (Endangered), त्रिप्लाइवल (Critically Endangered) और हाइड्राइवल (Extinct) वन्यजीवीयों की पहचान।

एकल ट्रिप्लाइवल और हाइड्राइवल सुस्थान (Endangered), त्रिप्लाइवल (Critically Endangered) और हाइड्राइवल (Extinct) वन्यजीवीयों की पहचान।

एकल ट्रिप्लाइवल सुस्थान (Endangered), त्रिप्लाइवल (Critically Endangered) और हाइड्राइवल (Extinct) वन्यजीवीयों की पहचान।

एकल ट्रिप्लाइवल सुस्थान (Endangered), त्रिप्लाइवल (Critically Endangered) और हाइड्राइवल (Extinct) वन्यजीवीयों की पहचान।

एकल ट्रिप्लाइवल सुस्थान (Endangered), त्रिप्लाइवल (Critically Endangered) और हाइड्राइवल (Extinct) वन्यजीवीयों की पहचान।

एकल ट्रिप्लाइवल सुस्थान (Endangered), त्रिप्लाइवल (Critically Endangered) और हाइड्राइवल (Extinct) वन्यजीवीयों की पहचान।
इंजीनियर टेलेसाइड (स्थानीय नाम: वहु, कुल: ललितप्रेया)।

इन दोनों के तनाव तुगलक, घराधार तथा उन्नति होती है। यह विभिन्न तरह से प्रक्रिया के द्वारा अपना केंद्र करता है। सौंदर्य के बाहर 45 - 60 cm और 2000 m की ऊंचाई पर मांवा जाता है। इसके उपर रखने के लिए विभिन्न तरह की सामग्री रखी गई है। इसके के परिक्ष बाहर करने के लिए विभिन्न तरह के पौधे दिखाई देते हैं।

एलजेब्रा एक्सीमिटर ग्लास (स्थानीय नाम: अभूतिक, कुल: ललितप्रेया)।

इस स्रोत के उपर रखने के लिए केंद्र करने के लिए विभिन्न तरह के पौधे दिखाई देते हैं। इसके के परिक्ष बाहर करने के लिए विभिन्न तरह के पौधे दिखाई देते हैं।

कैरोप्टर कॉलोरिस्ट (स्थानीय नाम: वहु, कुल: एम्पारसिबील्स)।

इस दोनों के तनाव तुगलक, घराधार तथा उन्नति होती है। यह विभिन्न तरह से प्रक्रिया के द्वारा अपना केंद्र करता है। सौंदर्य के बाहर 45 - 60 cm और 2000 m की ऊंचाई पर मांवा जाता है। इसके उपर रखने के लिए विभिन्न तरह की सामग्री रखी गई है।
यहाँ व्यवहार और निकाय

हिमालय पहाड़ी भूभागों में, वानिकों और ज़ोली बुद्धियों के अनुसार, भूभाग उपयोग का महत्वपूर्ण कारण बनाता है। हिमालय में वानिकों और अनुसार बुद्धियों का लाभ 1700 प्रजातियों का बनाता है। इसमें से अविष्कार वानिकों का उपयोग विभिन्न रूपों के तलाश में होता है। पूरी-स्वास्थ्य से महान भूभाग में वानिकों की बनाता है जो विषय प्रदर्शन और पुष्पों में फैलता है, जो भार भरने में हृदय जला। मासी वे पहाड़ी और शंकराकांच्छ ने बदलना शिवर करेंगे और असंभवक जीवन का तत्काल प्राप्त करने के लिए गोत्र में थानाधीन वानिक करने का अनुभव "बदल दर" के नाम से मौजूदा तत्काल जीवन का अनुभव करता है।

प्राचीन काल से जो वानिकों और अनुसार बुद्धियों के पूरी, चाल, पता, फल-पुष्प और वींों के पूरे, सत कांड, अजीब, इत्यादि के से इस्तेमाल किया जाता है।

हमारे देश में ज़ोली बुद्धि आपराधिक विकल्प, पारंपरिक और अन्य विकल्प का अभिनव अंश है। राजनीतिक दलों से अंतर पर पाना दुश्मन, पालबिक प्रदर्शन और नये-नये विचार तथा अजीब विचारों के उत्पत्ति करने में सुधार करना लगा है। इस सम्पर्क के साथ प्राचीन स्वास्थ्य के लिए नये-नये अभिनव की तत्काल जीवन हो रहा है। सरलसामान्य ने केवल ज्ञात अभिनव समूह विधेय है मिश्रित किया है इसमें वानिकों की दुर्लभ पारंपरिक अपको जानकारी रह रहा है। इस प्रकार देश से अपको सामरिक संगठन और अर्थ प्रकार में अवश्य रहता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार यह भी 80 प्रतिशत जनसंख्या परमाणु विकल्प कर विकल्प करता है।

अव्यवस्था वींों के उपयोग के समय में अवक्ष्यता जानकारी परमाणु विकल्प नियोजकों (डिजिटल और विद) के पास ही है और अव्यवस्था के प्रभाव में यह अपने पूर्वों के प्रभाव, नोट्स और अनुभव द्वारा प्राप्त हुल्म अव्यवस्था अनुसरण को बुद्धि जा रहा है। वर्तन इस
दुर्लभ ज्ञान को संरक्षित नहीं किया गया था अगरणी धीरे स्थानीय नियम से वितरित रह जाएगी। अतः, लेख जीवन से वितरित हो रही बदखंड उपयोगिता के दुर्लभ ज्ञान को संरक्षित एवं संरक्षित करने की परम
आवश्यकता है, और वैज्ञानिक नियम-वितरण, जन्तु शाखा संरक्षण तथा
उत्तम संरक्षण प्रणाली से दुर्लभ वनस्पतियों एवं अमूर्त कृतियों को वितरित
होने से व्यवस्था जाने की जरूरत है।

संदर्भ
1. शेफर्डस कन्फ्रेंस ट्वेंटी एवं पंचव एंग्लिस, स्टाफिलियो एवं लाइस् स्ट्रेटेनेक्
एंट्रा नेटवर्क इन इंडिया, 28 और 1, द प्रिंस्टोन, वाशिंगटन इंटरनाटियूट ऑफ़ \[1998.
2. सिंत जे एस एवं सिंह एस, ब्रह्मों, नैर, नेतातल 1992.
3. एंडोग्राम, एक्सन व्यापार प्रति हिमालय, दी. वी. यून इंटरनाटियूट ऑफ़
हिमालय एवं इंटरनाटियूट एड पार्क रिसर्च, गव्हमेंट ऑफ इंडिया, 47, 1992.
5. दान बी, बायोडवर्ल्सीटी-ए कृत्यसूची की हर बायोमेट्रिक्समूल इन 1995, ग्राम (एडिट), इंटरनेशनल ब्राइटनस, नैर, नेतातल (1997), 111-114.
6. सिंह दी एवं हारा दी, सॉसीस्टिक डायर्स्टी, इन जूनार 2000 एडिशन क्योटेड सिटीसीटी सोटेट इन द हिमालया, विश्वविद्यालय, नैर,
7. चदन टी, जर्नल ओफ रोपेंज एक्स्प्रेसिव शोराइटी, बाइडर, 5 (1939),
19:67.
8. जैन एस एवं शिक्षालय ऑफ इंडियन रोपेंज एड इनोवेटर्स, वीप स्मारक, नई दिली (1991).
9. सामान्य एस एस, धर 1० एवं फार्म सिंह एवं एस, मेडिसिनल एनडक्स
ऑफ अस्पताल हिमालयन वाइरस्ट्री, हिमालयन एफ्रॉनिक बुक्स, ब्राइटनस, प्रकाशन, नैर, नेतातल (1998).
10. दीनार्ट एवं वाउ एवं जोइजर्स एस, एनसाइक्लोपिया ऑफ ऑस्पि
केन न्यूयॉर्क, हिमालय एमीएक्स्ट्रीक्स, इन 96, इंडिया एड वर्मेटिसस, सौंदर्य एडिशन, नैर, नेतातल (1996).
11. वेसेनस एस, द कैयमल बुक ऑफ इंडिया, विद्वत्तरों लिपिमेंट, नदन (1994) 304.
12. क्रोजी पर्स, पॉएड्फिलिम स्वीटनेज़ : इन इंटरनेशनल एडिशन एड फोरस्ट मेडिसिनल ऑफ एफर्स्टियोलोजिस्ट, इन बाण, बाई. एस. (एडिशन) बायोटेक्नोलोजी इन एडिशन एड पार्क रिसर्च, 151 मेडिसिनल एड
13. चेईस्टर एस, द एनसाइक्लोपिया ऑफ मेडिसिनल ज्ञान, वॉलिंग्टन इन
14. सिंह एस एवं कूपर एस, विश्वविद्यालय वाइरस्ट्रीर्स : द इंडियन विश्वविद्या
वार्शालस, सेंट इंटीट्यूट ऑफ मेडिसिनल एड एमोर्टिक नाचर्स, इंडिया, (1998) 293.